काँच के फूल

जयश्री रॉय

काँच के फूल

हिया ने फेसबुक से लॉग आउट किया और बिस्तर पर गिरकर रोने लगी... नील और जेनोभी दोनों ऑन लाइन हैं, जरूर चैट कर रहे होंगे! सबीना ठीक कह रही थी। दोनों के बीच इन दिनों कोई चक्कर चल रहा है। नील जेनोभी का हर पोस्ट लाइक कर रहा है,

पिक्स पर कमेंट्स दे रहा है। उस दिन तो उसकी कविता भी अपने वाल पर शेयर किया। ओह गॉड! क्या नील मेरे साथ सचमुच टु टाइमिंग कर रहा है! सोच-सोचकर उसका दिल डूबा जा रहा था।

नील और वह तीन महीने से साथ हैं। दूसरे शब्दों में 'सीइंग इच अदर' उससे पहले रॉनी के साथ एक छोटा-सा अफेयर... वैसे उसमें 'नथिंग वाज सीरियस'! कह सकते हैं 'पार्ट ऑफ ग्रोइंग अप'। नील भी उन दिनों अपने 'एक्स' को भुलाने की कोशिश में था। दोनों कुछ कदम साथ चले तो लगा रास्ता आसान हो रहा है। मगर अब... हिया कुछ भी सोच नहीं पा रही थी। इतने सारे डेट्स - के.एफ.सी., डोमिनोज, आइनॉक्स... इस बार के नेवी बॉल में भी तो वही उसका डांस पार्टनर रही। दोनों ने 'बेस्ट डान्सिंग कपल' का खिताब जीता। सभी कह रहे थे, उनकी जोड़ी बहुत जँचती है। तब तो नील भी कितना खुश था उसके साथ! सारा कसूर जेनोभी का है। शी इज अ रियल बिच! हर हैंडसम लड़के पर डोरे डालती है। पढ़ना-लिखना तो है नहीं। सारा दिन कॉलेज कैंटिन में बैठकर आवारा लड़कों के साथ 'हा-हा, हू-हू' करती रहती है। बड़े बाप की बिगड़ी हुई औलाद! जाने उसमें क्या है कि लड़के भी मधुमक्खी की तरह उसके पीछे पड़े रहते हैं।

रोते हुए ही जाने उसे कब नींद आ गई थी। मोबाइल के मैसेज अलर्ट से चौंककर उठी थी। डिस्प्ले स्क्रीन पर नील का नाम चमक रहा था। विकल्प में जाकर उसने मैसेज खोलकर पढ़ा था - 'मिसिंग यू बेबी!' झूठा! मक्कार! अपना निचला होंठ काटते हुए उसने किसी तरह अपनी रुलाई रोकी थी। मुझे मिस कर रहा है और उस चुड़ैल से चैट कर रहा है! शायद वह समझ रहा है कि उसे उसकी करतूत का कुछ पता ही नहीं। फेस्बुक पर वह ऑन लाइन नहीं हुई थी। ऑफ लाइन रहकर ही दोनों पर नजर रख रही थी।

थोड़ी देर बाद नील का दूसरा मैसेज आया था - "चुप क्यों हो?" उसने बिना कोई जवाब दिए फोन बंद कर दिया था। तभी उसकी माँ दूध का गिलास लेकर कमरे में दाखिल हुई थीं - "हिया! पढ़ रही हो कि वही फेसबुक पर बैठी हो? परीक्षा को सिर्फ चार दिन रह गए हैं। पिछली बार अर्थशास्त्र में फेल होते-होते बची हो, याद है ना?"

"अर्थशास्त्र?" आ गईं उपदेश झाड़ने**...** मन ही मन चिढ़ते हुए उसने मुँह बनाया था।

"अर्थशास्त्र यानी इकॉनमिक्स! समझी? यहाँ सब अँग्रेज हैं!" माँ ने झुँझलाकर दूध का गिलास टेबल पर रख दिया था - "कितनी बार कहा इनसे, परीक्षा के समय इंटरनेट का कनेक्शन बंद कर दे। सबके सब बिगड़ते जा रहे हैं। बाप उधर अखबार या टीवी में

सर डाले बैठा है, बेटा का रातदिन क्रिकेट, आई.पी.एल. और बेटी को फेसबुक से फुरसत नहीं। रह जाती हूँ बस एक मैं!"

"माँ तुम फिर शुरू हो गई! मुझे पढ़ने दो..." हिया ने झल्लाकर कहा तो वे "हाँ जाती हूँ, जाती हूँ! पता है कितना पढ़ना है..." कहकर बड़बड़ाती हुई चली गई थीं।

उनके कमरे से बाहर जाते ही उसने उठकर ड्रेसिंग टेबल के आईने में अपना चेहरा देखा था और चिंहुक उठी थी - ओह गॉड! ये मुँहासा तो पक गया! कितना गंदा दिख रहा है! उस दिन नील कह रहा था 'आई हेट पिंपल्स!' सक्स! अब क्या करूँ! उसे फिर रोना आने लगा था... बाल सीधे करने हैं, नेल पॉलिश लगाना है, स्नग फिट जींस भी अभी तक सूखा नहीं! आईने में खुद को निहारते-निहारते जाने कितनी बातें उसे एक साथ परेशान कर रही थीं। टेस्ट खत्म होते ही जिम ज्वाइन करूँगी, जींस टाईट होने लगी है। उस दिन राघव फैटसो कहकर चिढ़ा रहा था। और इस साँवलेपन का भी कोई इलाज नहीं! पाँच साल से शायद पाँच सौ ट्युब निचोड़ डाले, मगर इन गोरे रंग का दावा करनेवाले क्रीम्स का कोई असर नहीं। सब झूठे, मक्कार! सोचते हुए उसने क्रीम का ट्युब उठाकर कमरे के कोने में फेंक दिया था। इसी गोरी रंगत की वजह से वो चुड़ैल जेनोभी सारे लड़कों की फेवरिट बनी हुई है... रात के दो बजे जाने कितनी सारी चिंताएँ लेकर वह सोने गई थी। इन सब के बीच उसकी बस पढ़ाई ही रह गई थी। ऐसा रोज होता है!

सुबह कॉलेज कैंपस में जाते ही उसे बुरी खबर मिली थी - तनु ने आत्महत्या कर ली है!

'कब?', 'कैसे?', 'क्यों?' - जाने एक ही साथ उसने कितने सवाल कर डाले थे।

"कल रात! सुना कांपोस का पूरा पत्ता गटक गई थी। सुबह उसकी माँ कॉलेज के लिए उठाने गईं तो उसे मरी हुई पाया!"

"मगर क्यों! उसे जान देने की नौबत क्यों आई?" हिया जैसे अब भी इस बात पर यकीन नहीं कर पा रही थी। वह बहुत करीब से उसे नहीं जानती थी। दूसरे डिविजन में थी वह। कितनी जहीन थी तनु, पढ़ाई में हमेशा अव्वल! एस.एस.सी. में पूरे राज्य में पाँचवी नंबर पर थी।

"कहते हैं किसी ने उसका एम.एम.एस. बनाकर नेट पर डाल दिया था। सब उसके एक्स ब्यॉय फ्रेंड का नाम ले रहे हैं। उसीने बदला लिया होगा। अपने माँ-बाप के कहने पर उसने उसे छोड़ जो दिया था!"

"कौन, कुणाल?"

हिया के पूछते ही शैली ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया था - "शी... इनका नाम लेना भी खतरे से खाली नहीं! देखती नहीं, कैसे रात-दिन कैंटिन में दबंगों के साथ बैठे रहते हैं ये लड़के? उस दिन किसी ने बाहर के लड़कों के कैंपस में आने पर ऐतराज किया तो उन्होंने चाकू निकाल लिया। कभी कोई क्लास में नजर आते हैं? प्रोफेसर्स भी इनसे डरकर चलते हैं। स्पोर्टस टीचर सावंत और रंगनाथन की तो इनसे पूरी मिली-भगत है। इनके बल पर मैनेजमेंट पर भी रौब जमाने से बाज नहीं आते।"

उस दिन तनु की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना और एक मिनट के मौन के बाद कॉलेज की छुट्टी कर दी गई थी। हिया का मन उदासियों में डूबा हुआ था। आज उसने कॉलेज कैंपस में नील को भी कहीं नहीं देखा था। बाहर निकलते हुए उसे राहिला ने बताया था कि उसने नील और जेनोभी को बास्किन रोबिन्स आईसक्रीम पार्लर में साथ-साथ आईसक्रीम खाते हुए देखा था। "जेनोभी अपने फेवरिट स्ट्राबेरी फ्लेवर के लिए नील से जिद कर रही थी..." बताते हुए राहिला ने शैली की तरफ देखकर शरारत से आँख मारी थी। सुनकर वह और उदास हो गई थी। आज सुबह से उसने कितने मिस कॉल दिए थे उसे, मगर उसने उसे मुड़कर फोन नहीं किया था। वह खुद भी उसे कॉल नहीं कर पा रही थी, क्योंकि उसके फोन में बैलेंस नहीं बचा था। पापा साढ़े तीन सौ का रिचार्ज हर महीने करवाते हैं, मगर इससे क्या होता है! 1000 का मैसेज पैक भी 15 दिन से ज्यादा नहीं चलता। नील बाकी रिचार्ज करवा देता है, मगर इस महीने जाने उसने क्यों नहीं करवाया। वह भी संकोच से कुछ कह नहीं पाई। जसिका ने कहा तो वह उसके साथ ममता को देखने उसके घर चली गई। ममता उनके क्लास में पढ़ती थे। उसकी तबियत बहुत दिनों से ठीक नहीं चल रही थी। जाने क्यों दिन पर दिन दुबली होती जा रही थी। उसे याद है स्कूल के दिनों में लड़कियाँ उसके सेब-से सुर्ख और फूले-फूले गालों की चुटकियाँ लिया करती थीं।

ममता के घर जाकर देखा था, वह अपने घर पर नहीं थी। खून की जाँच करवाने पैथोलॉजी सेंटर गई हुई थी। तीन दिन से उसका बुखार नहीं उतरा था। उसके घर में अमेरिका से उसकी आंटी आई हुई थीं जो मनोविज्ञान में बफेलो यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी. कर रही थीं। ममता की माँ उन्हें अपना नया बंगला घूम-घूमकर दिखा रही

थीं। ममता का इंतजार करते हुए हम भी उनके साथ थे। ममता के कमरे में ममता की तसवीर देखकर उसकी आंटी उसे यकायक पहचान ही नहीं पाई थीं - "ये ममता है! इतनी दुबली! उसकी तबीयत तो ठीक है?"

"अरे तबीयत को क्या हुआ! डायटिंग चल रही है। जानती हो ना आजकल जीरो फिगर फैशन चल रहा है।" उनके सवाल पर ममता की माँ ने हँसते हुए सहज भाव से जवाब दिया था और फिर फर्श पर पड़ी हुई ममता की कोई चीज उठाकर अलमारी में रखने के लिए जैसे ही उसके पल्ले खोले थे, प्लास्टिक का एक बड़ा थैला भरभराकर नीचे गिर पड़ा था। हम सब जमीन पर बिखरी हुई चीजों को हैरत से देखते रह गए थे - बासी, उबले अंडे, सड़े हुए टोस्ट, फल...

ममता की आंटी ने फर्श पर बिखरी चीजों से नजर हटाकर एक बार ममता की तसवीर की तरफ देखी थी और होंठों ही होंठों में बुदबुदाई थी - "ओह! आई सी... अनोरेक्सिया! खाना ना खाने की जानलेवा बीमारी!"

"क्या!" हम सब के मुँह से लगभग एक साथ ही निकला था। ममता की माँ का चेहरा एकदम से रक्त शून्य पड़ गया था। वे चुपचाप बिस्तर में बैठ गई थीं।

ममता की आंटी भी उनके पास बैठ गई थीं - "मुझे ममता के बारे में बताइए दीदी, सब कुछ!"

ममता की माँ गहरे आश्चर्य में दिख रही थीं - "क्या बताऊँ! सब कुछ तो ठीक था... ममता, मेरी बहुत अच्छी बच्ची! विनम्र, अनुशासित, कभी किसी बात का विरोध नहीं। ना कहना तो जैसे उसने सीखा ही नहीं। सब कहते, बेटी हो तो हमारी ममता जैसी।" कहते-कहते वे रोने लगी थीं - "आप तो जानती हैं, हमारी एकलौती बेटी को हमने भी किस प्यार-दुलार से पाला! उसके मुँह खोलने से पहले ही उसकी सारी इच्छाएँ पूरी कर दी। कभी स्कूल-कॉलेज तक अकेली जाने नहीं दिया, किसी बुरी संगत में पड़ने नहीं दिया... इतनी भोली जो है मेरी बच्ची!"

सुनते हुए आंटी के चेहरे का रंग बदला था - "हाँ, ये सब तो मैं जानती हूँ, उसमें हाल में आए बदलाव के बारे में बतलाइए।"

जाने वे क्या जानना चाहती थीं! हम भी ध्यान से सुन रहे थे। "इधर..." ममता की माँ सोचने की कोशिश करते हुए बोल रही थीं - "इधर उसके रिजल्ट खराब आने लगे हैं।"

"हमसे भी ज्यादा बोलती-बतियाती नहीं, अपने में गुमसुम-सी रहती है मैम!" हिया से रहा नहीं गया तो उसने भी बढ़कर कह दिया। आंटी सबकी बातें बहुत ध्यान से सुन रही थीं। "घर में भी अधिकतर अपने कमरे में पड़ी रहती है। खाना भी अपने कमरे में खाने की जिद करती है।" थोड़ी देर चुप रहकर ममता की माँ ने संकोच के साथ रुक-रुककर कहा था - "मैंने उस दिन ब्रा पहनने की सलाह दी तो उसने अजीब-सी बात कही - 'नहीं, मैं यह नहीं पहनूँगी! फिर मैं बड़ी हो जाऊँगी। मुझे बड़ी नहीं होना है!'"

सारी बातें सुनकर आंटी बेहद चिंतित नजर आने लगी थीं। उन्होंने ममता की माँ के दोनों हाथ पकड़ लिए थे - "सुनिए दीदी! हमारी बेटी बीमार है! उसे अनोरेक्सिया है! यह एक जानलेवा मानसिक बीमारी है। हमें और देर नहीं करनी चाहिए, ममता को मदद की आवश्यकता है।"

सुनकर ममता की माँ बेहद घबरा गई थीं। फफक-फफककर रोने लगी थीं। जसिका ने ही फिर बढ़कर इस बीमारी के बारे में तफसील से जानना चाहा था। घबरा तो सभी गए थे। आंटी ने उन्हें साधारण भाषा में समझाने की कोशिश की थी - "यह मानसिक बीमारी अधिकतर संपन्न घर की लड़कियों को किशोरावस्था में होती है। कुछ लड़कियाँ 'अच्छी बेटी' बनी रहने के लिए बड़ों की हर जायज-नाजायज बातों को मानती चली जाती हैं। दुर्बल व्यक्तित्व के होने के कारण ना चाहते हुए भी दूसरों की हर बात मानते चले जाने की विवशता उनके भीतर विद्रोह की भावना पैदा कर देती है। ममता के मामले में ही देख लो, बहुत ज्यादा सुरक्षित माहौल में इनका आत्मविश्वास पनप नहीं पाता। माँ-बाप की अनुशासित छत्र-छाया में उनका अपना परिचय खो जाता है। आईडेंटिटी क्राइसिस की मनःस्थिति में वे रात दिन घिरी रहती हैं। सेक्स के प्रति भी मन में कुंठा समा जाती है। वे बड़ी होने में असुरक्षित महसूस करने लगती हैं। इसलिए किशोरावस्था में शरीर में आनेवाले परिवर्तनों से भी परेशान हो जाती हैं। नहीं खाकर, दुबली रहकर वे खुद को जिस्म से बच्ची बनाए रखना चाहती हैं।"

वे सब हैरत से मुँह खोले उनकी बात सुन रहे थे। ओह! मन की दुनिया कितनी अजीब होती है! किसी भूलभुलैया से कम नहीं! आंटी का कहना खत्म नहीं हुआ था - "यह खाना ना खाना, अपनी मर्जी का करना एक तरह से उसी विद्रोह की अभिव्यक्ति है। इसमें वे अपनी जीत देखती हैं। इस बीमारी का इलाज इसलिए भी कठिन हो जाता है कि बीमार अपनी गलत सोच को सही समझता है और नहीं खाकर जितना दुर्बल होता जाता है, स्वयं को अपने इस मिशन में उतना ही सफल मानने लगता है। इस गलत बात के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक होता है।"

"अब ये बताओ हम करें क्या?" ममता की माँ लगातार रोए जा रही थीं।

"सबसे पहला काम तो यही है कि ममता के खतरनाक ढंग से गिर गए वजन को नॉर्मल स्तर तक लाना पड़ेगा। उसके बाद ही आगे की सोची जाएगी।"

ममता अभी तक नहीं लौटी थी। उन्हें यहाँ आए हुए काफी देर हो चुकी थी इसलिए वे फिर आने की बात करके वहाँ से चली आई थीं। रास्ते भर हिया को आंटी की बात याद आती रही थी। मन और भी विषन्न हो उठा था। आज का दिन ही मनहूस है। हर तरफ से बस बुरी खबरें!

घर में आते ही बुआ को देखकर उसका रहा-सहा मूड भी एकदम से बिगड़ गया था। इस झुमरी तलैयावाली बुआजी को वह जरा बर्दाश्त नहीं कर पाती। हर बात में दूसरों के फटे में टाँग अड़ाना, ताने देना, जासूसी करना... रिश्तेदारों के बीच मैडम 'हिंदुस्तान टाइम्स' के नाम से जानी जाती हैं। इसकी खबर उसे, उसकी खबर इसे... बस अब यही एक काम बचा है इनके जीवन में। एकलौते बेटी की शादी हो चुकी है। जाहिर है, बहू से भी नहीं बनती। ये सेर तो बहुरिया सबा सेर! इसलिए हर दूसरे, तीसरे महीने अचार, मठरी लेकर किसी ना किसी रिश्तेदार के घर छापा मारने निकल पड़ती हैं। उनको देखकर सभी का मुँह बन जाता है।

पैर छूते ही उन्होंने अपनी तहकीकात शुरू कर दी थी - "बड़ी देर कर दी बिट्टो आज तो आने में!" फिर दीवार घड़ी की तरफ देखा था - "बहू तो कह रही थी दो बजे तक घर आ जाती हो!" इसके बाद बाबूजी की ओर मुड़ी थीं - "समय बहुत खराब है नंदू! निर्भयावाला मामला देखा ना... दूसरों को दोष देकर क्या होगा। औरतों को खुद सम्हलकर रहना चाहिए... बाद में गला फाड़ते रहो, उससे क्या होने वाला! गया तो अपना ही जाएगा ना?"

उनकी बात सुनकर हिया का सर गरम हो गया था। मगर माँ का चेहरा पीला पड़ गया था। बाबूजी उसे इशारे से शांत रहने को कह रहे थे। फिर भी उससे चुप रहा नहीं गया था - "अगर जमाना बुरा है तो औरतों को घर के भीतर रहना पड़ेगा? क्यों भला! अंदर वह रहे जिसकी नीयत खराब है। क्या हम जंगल में रहते हैं कि शेर, भालू के डर से बाहर ना निकलें? और अगर दरिंदे खुले घूम रहे हैं तो उन्हें पिंजरे में बंद करो! मर्दों के डर से औरतें बहुत घरों में रह चुकीं, अब घर में रहने की बारी उनकी है। मैं तो कहती हूँ शाम के बाद सारे लफंगों, दबंगों को लॉक अप्स में डाल देना चाहिए ताकि लड़कियाँ निश्चिंत होकर घर से बाहर निकल सके!"

सुनकर बुआ मुँह फाड़कर हँसी थीं - "तेरी बेटी तो वाकई बहुत पढ़-लिख गई है रे नंदू!" फिर किसी तरह अपनी हँसी रोकते हुए व्यंग्य से बोली थी - "किताबों की दुनिया से बाहर निकलकर चीजों को देखना सीखो बिटिया, कितने धान से कितना चावल निकलता है पता चल जाएगा..."

उनकी बातों को टालने के लिए माँ पहले ही भीतर चली गई थीं। अब हिया भी पैर पटकते हुए उनके पीछे चली गई थी। जाते हुए उसने सुना था, बुआ पापा से कह रही थीं - "मेरी नजर में एक बहुत अच्छा लड़का है नंदू..."

खाने बैठकर वह बड़बड़ाती रही थी - "इन्हें मना कर देना, मेरे मामलों में टाँग ना अड़ाया करें!"

माँ ने खाना परोसते हुए अपने होंठों पर उँगली रखी थीं - "शी...! ऐसा नहीं कहते। तुम्हारे भले की सोचती हैं। पढ़ी-लिखी नहीं हैं इसलिए बोलने का सलीका नहीं आता। साई बाबा के दर्शन के लिए सीरीडीह जाएँगी परसों, दो दिन की ही बात है।"

जानकर हिया का मूड खराब हो गया था - "दो दिन!"

उसने खाना शुरू किया ही था कि मोबाइल का मैसेज अलर्ट आने लगा था। एक के बाद एक तीन। मोबाइल किताबों के बैग में था। शिट! मोबाइल साइलेंट पर करना भूल गई! वर्ना हमेशा वह घर में घुसने से पहले मोबाइल को याद से साइलेंट मोड में कर देती है। कॉल लॉग, मैसेज - सब मिटा देती है। उसने सारे लड़कों के नाम भी लड़कियों के नाम से सेव कर रखे हैं। ये मोबाइल भी जान का जंजाल बना हुआ है! कॉलेज में भी हर टीचर की नजर से छिपाओ। बीच-बीच में क्लास के सी.आर. से तलाशी ली जाती है तो कभी प्रिंसिपल खुद छापा मारने आ जाता है।

ओह गॉड! पूरी दुनिया हमें सुधारने के पीछे पड़ी हुई है! स्कर्ट घुटनों से दो इंच नीचे होनी चाहिए, ब्लाउज के सारे बटन बंद होने चाहिए, नो स्लीबलेस, नो टाइट्स, नो फैशन... जोसुआ ठीक ही कहता है - 'ये बूढ़े-खूसट हम नौजवानों से जलते हैं! जो खुद करना चाहकर भी कर नहीं पाते, वही करने से हमें रोकते हैं!' शैली कहती है - 'और क्या! ये पादरी लोग खुद कुंठित होते हैं। ना जीते हैं ना किसी को जीने देते हैं! एक कुंठित, अपने जीवन से नाखुश आदमी दूसरों को खुश देख नहीं पाता।' इधर घर में माँ की निगरानी! आँखें तो पूरी सर्चलाइट! जर्रा-जर्रा सूँघती फिरती हैं। कितने सारे तरीके ईजाद करने पड़े हैं उनकी सर्वव्यापी दृष्टि से बचने के लिए - हर जगह मोबाइल को उल्टा रखना पड़ता है ताकि आए मैसेज या भेजनेवाले का नाम ना दिखे। सिम लॉक,

स्क्रीन लॉक लगाया है। हमेशा साइलेंट पर भी। अधिकतर बाथरूम में घुसकर मैसेज बगैरह करना पड़ता है। निकलते समय टॉयलेट का चेन खींच देती है ताकि किसी को शक ना हो। फिर भी माँ को खटक ही जाता है - 'क्या बात है, आजकल नहाने में इतना समय लगता है, बार-बार बाथरूम जाकर देर तक अंदर बैठी रहती है! पहले तो दो-चार छींटे लगाकर काक स्नान करके बाहर निकल आती थी! वह चिढ़कर अपनी चोरी छिपाती - 'अब तुम भी मेरे साथ बाथरूम चला करो, बैठकर देखना क्या-क्या करती हूँ!' उस दिन तो कॉलेज में गजब हुआ, लॉजिक के लेक्चर के दौरान टीचर के अचानक क्लास में आ जाने की वजह से जल्दबाजी में मोबाइल ब्लाउज में छिपा दिया था। किसी सवाल का जवाब देने के लिए खड़ी हुई तो ब्लाउज में हलचल मच गई! साथ में जोर की घों-घों और जलती-बुझती रोशनी! फोन वाइब्रेटर पर था! वह सबके सामने पानी-पानी हो गई। कोई पीछे से गाया - चोली के पीछे क्या है... पूरे क्लास में ठहाका पड़ गया!

चौथे मैसेज की आवाज पर माँ ने उसे घूरा था - "तू फिर मोबाइल कॉलेज ले गई थी? याद है पिछली बार दो हजार जुर्माना भरना पड़ा था! प्रिंसिपल की डाँट अलग से। अब कभी पकड़ी गई तो फिर कभी मोबाइल नहीं मिलेगा याद रखना!"

"ठीक है, ठीक है!"

वह किसी तरह खाना खत्म करके अपने कमरे में चली आई थी। आज सब ने मिलकर उसका मूड खराब कर दिया था। इस बुआजी को भी अभी आना था। रही-सही कसर अकेली ही पूरी कर देंगीं! सामने किताब खोलकर बैठी रही थी देर तक, मगर अंदर कुछ जा नहीं रहा था। बार-बार नजर मोबाइल की तरफ घूम जाती थी। हर दो मिनट में किसी का मैसेज आता है। साथ में विज्ञापनवालों का - गणेशा स्पीकींग, इतने में इतने का टॉक टाईम फ्री, बेस्ट लव मैसेजस, रक्षा बंधन के मौके पर डबल धमाका ऑफर... कभी बाकायदा फोन करके विज्ञापन कंपनियाँ गीत सुनाते हैं, तरह-तरह की पेशकश करते हैं। शिकायत दर्ज करवाकर भी कोई फायदा नहीं। ऊपर से आए दिन कोई ना कोई स्कीम, सर्विस की सदस्यता दिलवाकर पैसे काट लेते हैं। कहो तो जवाब मिलेगा आपने ही गलती से सब्सक्राइब कर लिया होगा। शिट! परेशान होकर उसने फोन ऑफ करके ड्रॉर में रख दिया था - इसके साथ पढ़ना मुश्किल! ध्यान भटकता रहता है! माँ ने कहा है रिजल्ट खराब हुआ तो बुआ के लाए रिश्तों में से चुनकर किसी से फेरे डलवा देंगी! शादी और इतनी जल्दी! कभी नहीं! एक बार शादी की गाँठ पड़ी नहीं कि जिंदगी भर के लिए रसोई की कालकोठरी में बंद हो जाना पड़ेगा! अभी तो पढ़ना है, फिर किसी मल्टी नेशनल में नौकरी करनी है, फॉरेन टूर पर जाना है, दुनिया

देखनी है, जमकर रोमांस करना है... तब कहीं जाकर शादी! वह भी किसी अंबानी या सिंघानिया से। सोचकर उसके मन में गुदगुदी होने लगी थी।

तीन घंटे पढ़ने के बाद जब उसने मोबाइल खोला था, उसमें धराधर नील के मैसेज आने लगे थे, पूरे 15 मैसेज। साथ में मिस कॉल की सूचना भी। उसने उसे जवाब में एक छोटा मैसेज कर दिया था - 'एक्जाम, पढ़ाई करनी है!'

दूसरी तरफ से एक स्माईली के साथ मैसेज - 'ओक मैडम क्यूरी!'

थोड़ी देर बाद जसिका का फोन आया था। ममता की बात कर रही थी। कह रही थी, सच्चाई खुलते ही वह एकदम विद्रोह पर उतर आई है। किसी से इस विषय पर बात करने को तैयार नहीं। उसके इस नए रूप को देखकर सभी सकते में हैं। ममता की माँ जसिका से कह रही थीं कि हम सब मिलकर ममता से बात करें। ममता हमारी अच्छी सहेली है। उन्होंने यह भी कहा था कि सबके आग्रह पर उसने आज खाना खाया तो था, मगर बाद में बाथरूम जाकर उल्टी कर आई थी। लंबे समय से वह यही करती आई थी, टेबल में सबके साथ खाते हुए अपनी जेब में या रूमाल में खाना छिपाकर रख लेती थी। सुनकर ममता की अलमारी में रखे हुए प्लास्टिक बैग का राज उसे समझ आया था। ममता की माँ ने उन्हें बुलाया था। कल जाने की बात कहकर उसने फोन रख दिया था।

कमरे से निकलते हुए उसने सुना था, बुआजी माँ से दबी जुबान में कह रही थीं - 'बेटी की किताब, अलमारी को बीच-बीच में चेक कर लिया करो। हो सकता है कोई प्रेम पत्र-वत्र मिल जाए।'

सोने से पहले बुआ और माँ कई बार कमरे में झाँक गई थीं। उनके सोने के बाद किताब के बीच मोबाइल छिपाकर उसने फेसबुक खोला था। शिट! नेट पैक भी लेना था! माँ भुनभुनाती रहती हैं कि इस लड़की के खर्चे बढ़ते ही जा रहे हैं! ऐसे ही फिजूलखर्ची करती रहेगी तो उसके दहेज के लिए कहाँ से पैसे जुड़ेंगे! मैसेज बॉक्स में दस मैसेज। उनमें नील के पाँच। बाकी राहुल, नैना और प्रीति के। रसेल का पोस्ट देखकर उसे धक्का लगा था... अस्पताल के बिस्तर पर! पूरे बदन पर पट्टी! दोनों पैर टूट गए हैं। लिखा है - फ्रेंड्स! तीन महीने की छुट्टी! दो दिन पहले ही नई बाईक खरीदी थी। सबके सामने शो मार रहा था। इतनी जोर से चला रहा था! उसे भी एक राइड दे रहा था। थैंक्स गॉड! उसने मना कर दिया था। लो, अब हो गई छुट्टी! राहुल ने अपने पेज में कई फनी पिक्स लगाए थे। उसे फोटोशॉप का अच्छा तजुर्बा है। तस्वीरों को क्या से क्या बना देता है! जेनोभी ने फिर अपना प्रोफाइल पिक्चर बदला है। हूँ! खुद को

प्रियंका चोपड़ा समझती है। हर दो दिन में नया फोटो... मोटी कहीं की! इसे सबक सिखाती हूँ! उसने अपने दूसरेवाले फेक अकाउंट से उसकी तसवीर के नीचे कमेंट डाल दिया था - 'आंटी दिख रही हो, वजन घटाओ!' ये नकली अकाउंट बड़े काम की चीज है। जिसे चाहो लतियाओ! झूठ का सहारा लेकर ही सच बोला जा सकता है। कितनी अजीब बात है!

दूसरे दिन कैंटिन में घुसते ही नादिया ने उसे बुला लिया था। पूरा गैंग वहाँ जमा था। नरेंद्र बेंच बजाकर गा रहा था - "जलेबी बाई..." ऐसली का आज जन्मदिन था। इसलिए सबको ट्रीट दे रहा था। उससे केक का टुकड़ा लेकर उसने उसे विश किया था। किसी ने राहत के बारे में पूछा था।

"और कहाँ होगा! वही लायब्रेरी में किताब में सर डालकर बैठा होगा! ... आइंस्टाइन की औलाद!" तेजपाल ने मुँह बिचकाकर कहा था। राहत पढ़ाई में बहुत तेज है। हमेशा क्लास में अव्वल आता है।

"हमसे तो इतना पढ़ा नहीं जाता!"

"जरूरत भी क्या है तुम आरक्षणवालों को मेहनत करने की! बैठ-बैठकर ही सब मिल जाता है..." अरुण की बात पर जेसन ने सबकी ओर आँख मारते हुए कहा था। उसकी बात पर चारों तरफ एक दबी-दबी हँसी फैल गई थी।

सुनकर अरुण का चेहरा लाल हो उठा था। एक पल के लिए वहाँ चुप्पी पसर गई थी। फिर राका ने बढ़कर सबको डपटा था - "जी हाँ! इन्होंने बहुत मेहनत कर ली है, अब इन्हें आराम ही करना है! मेहनत करने की बारी अब आप सब कामचोरों की, जब तक ना इनके सारे नुकसान की भरपाई कर दें! समझे? अब उठिए और रिहर्सल में लग जाइए, ड्रामा कॉम्पीटिशन में ज्यादा दिन नहीं रह गए हैं!"

इसके बाद भीड़ तितर-बितर हो गई थी। दूसरे लेक्चर की घंटी भी बज गई थी। हिया जल्दी-ज्ल्दी अपनी कक्षा की ओर बढ़ गई थी। उसे ये आरक्षण आदि की राजनीति से घबराहट होती है। विद्यार्थियों को इनसे दूर ही रहना चाहिए। रेसेस के बाद आधा क्लास खाली था। खाली क्लास देखकर मिस इफा आईं का मुँह बन गया। कितनी मेहनत से आज उन्होंने फंडामेंटल साइकॉलोजी का लेक्चर तैयार किया था। हिया सामने की बेंच पर अकेली बैठी थी। उसे याद आया आज शुक्रवार है और आइनॉक्स में 'चेन्नई एक्स्प्रेस' लगी है। सब क्लास बंक करके वहीं गए होंगे। वैसे भी टिफिन के बाद आधा क्लास अक्सर खाली ही होता है। जब टीचर रोल नंबर लेते हैं, स्टुडेंटस

एप्लीकेशन पर हस्ताक्षर करवाने उनके ईर्द-गिर्द जमा होते हैं। इस मौके का फायदा उठाते हुए कई लड़के-लड़कियाँ क्लास से बाहर खिसक लेते हैं।

जब मिस सलदाना ने पर्सनालिटी डिसऑर्डर पढ़ाते हुए अनोरेक्सिया तथा बुलेमिया अर्थात ना खाने की और बहुत खाने की मानसिक बीमारी के विषय में पढ़ाना शुरू किया तो वह चौंककर ध्यान से सुनने लगी - हाल तक ये पश्चिमी देशों की समस्या मानी जाती थी, मगर आर्थिक संपन्नता के साथ भारत जैसे देशों में भी अब उच्च तथा उच्च मध्यम वर्ग में इसका प्रभाव दिखने लगा है। लक्षण... वही सारे जो ममता में हैं। इलाज बहुत मुश्किल क्योंकि बीमार इसमें सहयोग नहीं करता। सबकी आँखों में धूल झोंकने की उसकी तमाम कोशिशें - खाना छिपाकर फेंक देना, खाकर गले में उँगली डालकर उल्टी कर देना, अस्पताल में मशीन पर वजन देखते हुए जेबों में कोई वजनी चीज छिपा लेना ताकि सही वजन का पता ना चल सके... सुन-सुनकर हिया का दिल बैठता रहा था - सहयोग ना करने की स्थिति में इलाज के लिए ऐसे बीमारों के हाथ-पैर बाँधकर रखना पड़ता है, प्रतिरोध कम करने के लिए उन्हें सेडेटेड भी किया जाता है, नली के सहारे शरीर में पोषक तत्व भेजे जाते हैं। दवाई के साथ-साथ काउंसिलिंग की जरूरत होती है...

उस दिन घर लौटते हुए उसे बार-बार ममता का ख्याल आता रहा था। परीक्षा के बाद उससे मिल आएगी सोचकर खुद को तसल्ली दी थी। गांधी चौक के पास उसने नील और जेनोभी को बाईक पर मीरामार बीच की तरफ जाते हुए देखा था मगर उसने उन्हें पुकारा नहीं था। एक अजीब-सी विरक्ति का भाव पैदा हुआ था मन में - भाड़ में जाए सब!

परीक्षा से पहले के दो दिन उसने खूब मन लगाकर पढ़ा था। फोन उठाकर अलमारी में रख दिया था, फेसबुक भी खोला नहीं था। बुआ चली गई थीं इसलिए घर में शांति थी। उसके सारे पर्चे अच्छे गए थे। आखिरी पेपर इतिहास का था। कॉलेज गई तो सबको यहाँ-वहाँ किताब में सर डाले हुए पाया। आँखों में जगार, उड़े हुए बाल, लड़कियों के बिना मेकअप के चेहरे... सब के हाल कमोबेश एक जैसे! मगर जेनोभी का स्टाईल बरकरार था। वही स्नग फीट टॉप, फेडेड जींस और ऊँची एड़ी का जूता! सबके साथ फादर आंतिम भी उसे घूर कर देख रहे थे। हिया को देखकर टोनी ने उसे पास बुलाया था - "अच्छा! जरा ये बताओ बालिके! नेपोलियन का हाईट जानना हमारे लिए क्यों जरूरी है? इससे किसी का क्या भला होगा? कल सारी रात जगकर रीतिकाल की नायिकाओं का नख-शिख वर्णन पढ़ रहा था... यही सब पढ़-पढ़ाकर इंडिया सुपर पावर बनेगी क्या? बुल शिट" उसकी बात सुनकर हिया को हँसी आ गई थी। टोनी के बालों

में आज जेल नहीं लगा था, इसलिए उसके हमेशा साही की तरह तने रहनेवाले नुकीले बाल आज चेहरे पर पस्त गिरे हुए थे। रतन एक कोने में बिना एक बार भी सर उठाए पढ़े जा रहा था। गरीब माँ-बाप का एकलौता बेटा, उसे तीन बहनों की शादी करनी है। रात दिन इसी फिक्र में घुला रहता है। उसे चार-पाँच प्रतियोगिता परीक्षाओं में भी बैठना है। कॉलेज के बाद कई जगह ट्युशन पढ़ाता है। जाने सब कुछ कैसे मैनेज करता है!

रॉनी ने आकर टोनी से दो सौ रुपये उधार माँगे थे - "फॉर गॉड्स सेक! इज्जत बचा ले यार! गर्लफ्रेंड कैंटिन में बैठी ऑडर पे ऑडर दिए जा रही है - मैक्सिकन पिज्जा विथ थिक क्रस्ट एंड एक्सट्रा चीज! मोटी बहुत खाती है! नहीं खिलाया तो जेम्स की बड़ीवाली बाईक में बैठकर अभी चली जाएगी..." उसका चेहरा यह कहते हुए रुआँसा हो आया था।

टोनी ने उसे उधार देने से मना कर दिया था - "गर्ल फ्रेंड अफोर्ड नहीं कर सकता तो रखता क्यों है?"

'ना' सुनकर छुहारे-सा मुँह बनाकर वह एक और लड़के की तरफ बढ़ गया था।

पर्चा देकर हिया बाहर आई तो उसका मन बहुत हल्का हो आया। उसका पर्चा बहुत अच्छा गया था। आज घर जाकर खूब सोना है... कितने दिन से पूरी नींद सोई नहीं। गुलमोहर के नीचे चलते हुए हिया ने सोचा था। कॉलेज कैंपस में रास्ते की दोनों ओर कतार से गुलमोहर के पेड़ लगे हुए हैं, इस मौसम में सुर्ख फूलों से भरे हुए। झरे हुए हुलमोहर से रास्ता भी दूर-दूर तक लाल दिख रहा है। एक अच्छी बारिश के बाद चमकीली धूप निकली है। सबकुछ धुला-धुला, निखरा! हल्की चलती हवा में बोगनबेलिया के पौधे झूम रहे हैं। यह कॉलेज एक पहाड़ी पर है। ऊपर से एक तरफ मापुसा शहर दिखता है तो दूसरी तरफ पहाड़ की ढलान पर बसी झोपड़पट्टी! मापुसा गोआ का एक छोटा और खूबसूरत शहर है।

यहाँ आए हुए हिया के परिवार को दस साल हो गए हैं। जब वे यहाँ आए थे, हिया बहुत छोटी थी। स्कूल में थी। अब तो इतने सालों में यही की होकर रह गई है। हालाँकि माँ बार-बार याद दिलाती हैं, यह हमारा समाज नहीं है! तेरी शादी भी यहाँ नहीं होनी है। सोचते हुए वह कैंपस के पिछले गेट तक पहुँच गई थी। उसकी आहट पाकर एक जोड़ा दाईं तरफ बने टेनिस कोर्ट की सीढ़ियों से झाँककर देखा था और हड़बड़ाकर अपने कपड़े झाड़ते हुए उठ खड़ा हुआ था। लड़की के होंठ फीके थे और लड़के के रँगे हुए। देखकर उसे हँसी आ गई थी जिसे दबाते हुए वह अनजान बनकर आगे बढ़ गई थी।

चारों तरफ यही हाल है। कोई गुलमोहर के पीछे छिपा है तो कोई प्रयोगशाला में दुबका बैठा है। लायब्रेरी में भी प्रेमी युगल घंटों अलमारियों के पीछे अँधेरे कोनों में घुसे किताबें ढूँढ़ते रहते हैं। जाने वह कौन-सी किताब है जो उन्हें इतना ढूँढ़ने के बावजूद आज तक नहीं मिल सकी! सोचते हुए वह गेट तक पहुँची थी जब पीछे से जसिका ने उसे आवाज दी थी। पास आकर उससे कहा था, चल ममता के यहाँ चलते हैं, उसकी माँ ने बुलाया है। हिया तैयार हो गई थी। वह तो खुद ही जाने की सोच रही थी कल से।

जब जसिका और हिया ममता के घर पहुँची थी, ममता सो रही थी। ममता की माँ ही उनके साथ देर तक बोलती रही थीं। ममता की आंटी की दी हुई हिदायतों पर वे पिछले दिनों से अमल करती रही थीं और उन्हें अपनी कोशिश में कुछ कामयाबी मिलती भी नजर आ रही थी। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी थी। ममता के साथ ज्यादा से ज्यादा समय भी बिता रही थीं। यह जरूरी था कि ममता का अपने माँ-बाप पर पूरा विश्वास रहे और वह उनके सामने स्वयं को खोल सके। शाम को जब माँ-बेटी टहलने निकलतीं, उसकी माँ उससे अपनी तथा घर की समस्याएँ डिस्कस करतीं, उसकी राय माँगतीं ताकि ममता को लगे कि उसी में नहीं, सभी में कमजोरियाँ हो सकती हैं और सभी को किसी ना किसी बात में मदद की जरूरत होती भी है। इसमें कोई शर्म की बात नहीं। वह अब सहज होने लगी थी। उसका प्रतिरोध भी कम पड़ने लगा था। दो दिन पहले ही वह अस्पताल से लौटी थी। इस बीच उसका वजन भी तीन किलो बढ़ा था।

ममता जगी तो उन्हें देखकर बहुत खुश हुई। उसे परीक्षा ना दे पाने का बड़ा मलाल था। गुलदान में सजे सावनी के बैंजनी फूलों की तरफ देखते हुए उसने खोई-खोई आवाज में कहा था - "माँ चाहती हैं मैं आई.ए.एस. ऑफिसर बनूँ, क्योंकि कभी वे आई.ए.एस. ऑफिसर बनना चाहती थीं। लेकिन मै तो फैशन डिजाइनर बनना चाहती हूँ। माँ-बाप अपने अधूरे सपनों को अपने बच्चों में पूरा करना चाहते हैं, मगर बच्चों के अपने सपनों का क्या! पैंट पहनकर मुझे परेड करना भी अच्छा नहीं लगता, लड़के फब्तियाँ कसते हैं, मगर पापा को स्पोर्टस पसंद है तो मुझसे एन.सी.सी. ज्वायन करवाया। कोई मेरी मर्जी क्यों नहीं पूछता? थक गई हूँ मैं एक अच्छी लड़की बनकर सबकी इच्छाएँ ढोते-ढोते..."

हिया ने उसकी दुबली बाँहें सहलाई थी - "उन्हें अपनी पसंद-नापसंद से अवगत कराओ, आई एम श्योर, वे तुम्हारी ही खुशी चाहते हैं!"

"हूँ!" सुनकर ममता मुस्कराई थी। लगता था, सबकी बातें उस तक अब पहुँचने लगी थीं। शुभ संकेत था। जब वे वहाँ से निकलने लगे थे, ममता ने झिझकते हुए कहा था - "माँ से कह दो मैं काउंसिलिंग के लिए डॉक्टर के पास जाने के लिए तैयार हूँ!"

कॉलेज में फेट हुआ था, सालाना जलसा, सोशल... हिंदी विभाग ने हिंदी दिवस मनाया था। हिया ने सब में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। इन मौकों में पढ़ाई की बोरियत और तनाव से कुछ निजात मिल जाती थी। दोस्तों के साथ मिलकर हर जगह घूम-घूमकर प्रोग्राम के टिकट्स बेचना, बैनर तैयार करना, डांस आदि का रिहर्सल... उसे हर बात में बहुत मजा आता था। फेट के दौरान उसने फैशन शो में भी हिस्सा लिया था और दूसरा ईनाम जीता था। 'मांडो'- विशेष पुर्तगाली गीत के लिए भी उसके ग्रुप को ईनाम मिला था।

दिसंबर का तो पूरा महीना ही त्योहार और कार्यक्रमों का महीना होता है। तीन दिसंबर को सेंट जेवियर्स के जन्मदिन के अवसर में पूरे गोआ में छुट्टी रहती है। उस दिन ओल्ड गोआ में बम जीसस चर्च जाने के बहाने वह नील के साथ आइनॉक्स में एक फिल्म भी देख आई थी। जेनोभी अचानक पढ़ाई छोड़कर अपनी माँ के पास दुबई चली गई थी। उसके बाद नील उसके पास लौट आया था। आखिर थोड़े दिनों के ना-नुकुर के बाद वह भी मान गई थी। दोनों का साथ-साथ घूमना, समय बिताना फिर से शुरू हो गया था। मन में एक कसक तो थी, मगर नील से दूर रहना उसके लिए आसान नहीं था। फिर वह ज्यादा भाव दिखाती तो नील किसी और के पास चला जाता। उसके लिए लड़कियाँ लाइन लगाकर खड़ी रहती हैं। जसिका ने भी समझाया था - "मर्दों की छोटी-छोटी बातों को इग्नोर करना सीख। वफा इनके डीएनए में नहीं होती। तुझ पर मरने की कसमें खाएँगे मगर नजर दूसरों पर लगी रहेगी। वो तो गनीमत हुई, ऊपरवाले ने इन्हें कुत्तों की तरह एक अदद पूँछ से नहीं नवाजा, वर्ना लड़कियों के सामने लगातार हिलती ही रहती!" सुनकर रोते हुए भी उसे हँसी आ गई थी।

लायब्रेरी में पढ़ने का बहाना बनाकर इन दिनों वह नील के साथ उसकी बाईक में बैठकर घूमती रहती है। पिछली सीट में उसे बैठाकर जब नील अपनी बाईक तेज गति से दौड़ाता, वह रोमांच से भरकर उसकी पीठ से लग जाती और अपनी आँखें मूँद लेती। उसे लगता दोनों किसी घोड़े पर सवार होकर बादलों के बीच उड़े जा रहे हैं। सब कुछ स्वप्नवत प्रतीत होता, मांसल भी और स्पर्श से परे भी - देहातीत! अधिकतर वे शामों को वाघातोर या कलंगुट बीच पर सूर्यास्त देखने जाते। गीली रेत पर दूर तक नंगे पैरों साथ-साथ चलना, नमकीन हवा में सूखी मछली और खर-पतवार की उग्र, मादक गंध, जल पक्षियों का उदास शोर... कासनी आकाश की पृष्ठभूमि में क्षण-क्षण रंग

बदलता समंदर, उसकी बेचैन लहरें... सब कुछ उसे किसी और दुनिया में खींच ले जाता। उसे प्रतीत होता वे 'एक दूजे के लिए' के 'सपना-वासु' हैं। नील गोवा का है। उसे वासु की तरह बहुत अच्छी हिंदी नहीं आती। वह खुद बिहार की। शुरू-शुरू में उसे भी अँग्रेजी में दिक्कत होती थी। कभी रूमानियत से भरकर वह सोचती क्या वे इस समंदर में 'सपना-वासु' की तरह डूबकर जान नहीं दे सकते! सोचते हुए कल्पना की आँखों से उसे अपनी और नील की लाशें समंदर की सुनहरी लहरों में उभती-चुभती हुई नजर आने लगतीं और आँखों में आँसू भर आते। नील कहता - 'तुम पागल हो!' वह रेत पर दोनों के नाम लिखती हुई उदास मुस्कराती - 'हूँ...' दूर तक बिखरी काली चट्टानों और काजू के महकते जंगलों के बीच पहली बार नील ने उसे प्यार किया था। उसने सिहरकर कहा था - 'जानते हो नील! कहीं पढ़ा था, मरते हुए एक औरत को उसका पहला चुंबन याद आता है! तुम्हारा ये स्पर्श मुझे मेरे आखिरी पल तक याद रहेगा!' इसके बाद दोनों के बीच एक खूबसूरत-सा मौन देर तक के लिए पसर गया था।

बस माथे के ऊपर नारियल के लंबे, चीरे पत्ते सरसराते रहे थे चढ़ते ज्वार की तेज हवा में। नील के साथ थोड़े दिन घूमकर उसे पता चला था, गोआ कितनी खूबसूरत जगह है। यहाँ की नाइट लाइफ - पब, डिस्कोथेक, मांडवी नदी पर तैरते रंग-बिरंगे कसिनोज... पिछले साल पहली बार नए वर्ष की पार्टी में वह दोस्तों के साथ यहाँ के मशहूर डिस्कोथेक 'टिटोज' में गई थी, वह भी घर में झूठ बोलकर कि उसकी सहेली का एपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ है, उसे उसके साथ अस्पताल में रहना है। उसे झूठ बोलना अच्छा तो नहीं लगता, मगर क्या करे! माँ-बाप ही इसके लिए मजबूर करते हैं। अगर आप सच सुन नहीं सकते तो अपको झूठ ही मिलेगा! मनपसंद चीजों को ताले में बंद करके रखोगे तो बच्चे चुराकर ही खाएँगे! पता नहीं क्यों हमारे यहाँ लोग हमेशा नकार में जीते हैं। हर वह चीज जो अच्छी लगे उसी से दूर रहो! हँसना नहीं, जीना नहीं! बस मुँह लटकाकर, मन मारकर जीते रहो! शायद इसी से सब कुंठित और ग्रंथियों के शिकार हैं। खुद मन मुताबिक जी नहीं पाते तो दूसरों को भी जीने नहीं देते। उसी दिन 'टिटोज' की पार्टी में उसने पहली बार लिमका में मिलाकर 'बोदका' पिया था। और भी क्या-क्या - बकार्डी रिजर्वा के व्हाईट रम में मिलाकर जमाइकॉन फ्लेवर का ब्रीजर, टकिला, कॉकटेल ब्लडी मैरी, व्हाइट मिस्ट, पिना कोलाडा... पहली बार, वह भी इतना कुछ! थोड़ा-थोड़ा चखकर ही नशा हो गया था। उसे तब कहाँ पता था रम, बोदका, व्हिस्की आदि कभी एक साथ मिलाकर नहीं पीते! गनीमत थी कि उस रात घर नहीं लौटना था।

लेकिन जो भी हो, मजा बहुत आया था - ठहाके, रोशनी, म्युजिक... काश वह ऐसी जगहों में अक्सर आ-जा सकती! कितने दकियानूस हैं उसके परिवारवाले! खासकर माँ! उनका एक ही ध्येय है जीवन में - किसी तरह घेर-घारकर उसकी शादी करवा दे! मगर वह अपने जीवन को पूरी तरह से एन्ज्वाय करना चाहती है। एक बार शादी हो गई तो बस हो गई छुट्टी! पहले-पहल तो दोस्तो की जिद की वजह से उसने शराब पी थी मगर अब उसे चस्का लग गया है। जब भी मौका मिलता है, पी लेती है। 'पीअर प्रेशर' में बहुत कुछ करना पड़ता है। वर्ना आप भीड़ से अलग-थलग पड़ जाओगे। नील ने भी दोस्तों के कहने में आकर सिगरेट पीना शुरू किया है। ईसाइयों की शादी में जाना हिया को इसलिए भी पसंद है कि वहाँ शराब सर्व की जाती है और डांस भी जमकर होता है। अब वह भी बॉल डांस, बालट्ज़, टेन्गो, चा-चा, ट्वीट्स, रांबा-सांबा - सब कर लेती है। सारा दिन घूम-घूमकर वह इतना थक जाती कि शाम को घर लौटकर उससे और कुछ नहीं होता। बस किसी तरह खा, नहाकर सो जाती। क्लासेज भी वो रोज बंक कर रही थी। नील का प्रेम उसके सर चढ़कर बोल रहा था। उसके साथ सारा दिन घूमना, देर रात तक फेसबुक पर चैट करना, मिल्स एंड बून्स सीरिज के रोमानी उपन्यास पढ़ना... कभी-कभी मन में ग्लानि के भाव भी उत्पन्न होते मगर वह अपने दिल के हाथों मजबूर हो गई थी। उसे नील के सिवा कुछ सुझ नहीं रहा था।

इस बीच ममता स्वस्थ होकर कॉलेज लौट आई थी। अब वह सबसे हँसने-बोलने लगी थी। काफी खुश भी नजर आ रही थी। शीतल और अशोक ने अचानक से सामंतवाडी भागकर शादी कर ली थी। गोआ में पुर्तगाली कानून होने की वजह से रजिस्ट्री मैरिज करने में काफी दिक्कतें आती है इसलिए यहाँ के प्रेमी युगल अक्सर महाराष्ट्र के सामंतवाडी में जाकर विवाह कर आते हैं। वहाँ पंडित थोड़े-से पैसों के बदले में कहीं भी बैठाकर शॉर्टकट में शादी करा देते हैं और वह वैधानिक मानी जाती है। शीतल यहाँ के एक बड़े मंदिर के पुरोहित की बेटी है और अशोक दलित। शीतल के माता-पिता शीतल की शादी करना चाह रहे थे, अंतः दोनों को यह आकस्मिक निर्णय लेना पड़ा था। अब दोनों को उनके घरवाले घर से निकाल चुके थे और वे यहाँ-वहाँ भटकते फिर रहे थे। आठ-दस दिन तो दोस्तों ने चंदा करके उनका खर्च उठाया था इसके बाद अशोक ने एक साइबर कैफे में नौकरी ढूँढ़ ली थी। शीतल भी कुछ बच्चों को ट्युशन पढ़ाने लगी थी। शादी के बाद दोनों की जिंदगी एकदम से बदल गई थी। घर से खा-पीकर कॉलेज के कैंटिन और पार्क में इश्क लड़ाने में और जिंदगी की हकीकतों का सामना करने में बहुत फर्क होता है। थोड़े ही दिनों की मुफलिसी ने दोनों की सिट्टी-पिट्टी गुम कर दी थी। उनका हश्र देखकर दूसरे प्रेमियों के माथे भी ठनकने लगे थे।

बारहवीं के बोर्ड से पहले प्रीलियम्स एकदम सर पर आ गए थे। सारे टीचर्स विद्यार्थियों के पीछे उनका हौसला बुलंद करने में लगे हुए थे। प्रिंसिपल बार-बार कक्षा में आकर सरमन झाड़ते। इन सब में मिस सलदाना की बात जुदा थी। उनकी साड़ी, लिपस्टिक, गहने - सब मैचिंग होते। बिल्कुल 'मैं हूँ ना' की नायिका की तरह। सब उन्हें पीठ पीछे सुस्मिता सेन कहकर बुलाते थे। उन्हें भी इस बात का अहसास था कि वे सुस्मिता सेन की तरह दिखती हैं तभी हर बात में उनकी नकल उतारती रहती थी। मिस सलदाना के क्लास में विद्यर्थियों की उपस्थिति हमेशा सौ प्रतिशत रहा करती थी। उन्हें सब सुनते कम और देखते ज्यादा थे। दूसरे क्लास के विद्यार्थी भी उनके लेक्चर में आ बैठते थे। उन्होंने भी एक दिन हिया को स्टाफ रूम में बुलाकर बहुत समझाया था। बताया था कि नील उसके लिए ठीक लड़का नहीं है। वह उसकी संगति छोड़कर पढ़ाई में मन लगाए। उनके सामने तो हिया चुपचाप सर हिलाती रही थी मगर बाहर आकर मुँह बनाया था - ऊँह! बड़ी आई समझाने!

प्रीलियम्स के लगभग सारे पर्चे उसके खराब गए थे। वह तो गनीमत थी कि माँ गाँव गई हुई थीं वर्ना उसकी अच्छी-खासी मरम्मत हो जाती। माँ परीक्षा के समय उसे इस तरह कभी छोड़कर नहीं जातीं, मगर दादी की बिमारी की खबर आ गई थी। घर में उनके ना होने की वजह से उसे और ज्यादा छूट मिल गई थी। पापा सारा दिन दफ्तर में रहते। उनके पीछे अब नील छिप-छिपकर घर में भी आने लगा था। उसकी माँगों के साथ-साथ उसकी हिम्मत भी बढ़ती जा रही थी। हिया उसके सामने बेबस होकर रह जाती। उसे किसी बात के लिए ना करना उसके वश की बात नहीं रह गई थी।

परीक्षा के बाद फिर एक दुर्घटना घटी थी। बी.ए. दूसरे वर्ष में में पढ़नेवाली काम्या महाजन अपने तीन-चार दोस्तों के साथ एक पार्टी में गई थी जहाँ उसके कोल्ड ड्रिंक में कोई नशीली चीज मिलाकर कुछ लड़कों ने उसके साथ बलात्कार किया था। यही नहीं, बलात्कार के बाद गला घोंटकर उसे जान से मार भी दिया था। आंजुना बीच में दूसरे दिन उसकी लाश पाई गई थी। इस घटना से कॉलेज के बच्चों में सनसनी फैल गई थी। किस बेरहमी से उसकी जान ली गई थी। बाद में उसकी हत्या के जुर्म में जिन तीन लड़कों को पकड़ा गया था वे सभी ब्राउनी याने ड्रग लेनेवाले पाए गए थे। कॉलेज के ही नहीं, स्कूल के बच्चे भी आजकल ड्रग के शिकार होते जा रहे थे। स्कूल के आसपास आइसक्रीम, चाट आदि बेचनेवाले बच्चों में पहले ड्रग की आदत डालते फिर उन्हें ड्रग बेचते। कुछ दिन पहले ही प्रिंसिपल ने कॉलेज हॉस्टल से दो लड़कों को इस वजह से निकाल बाहर किया था। वे रातों को किसी सुनसान जगह में या हॉस्टल की छत पर बैठकर ड्रग लेते थे। हॉस्टल से निकाले जाने के बाद उनमें से एक लड़का अपना

मानसिक संतुलन खो बैठा था और अब उसका इलाज चल रह था। इन सारी घटनाओं ने हिया को बेहद परेशान कर दिया था। लेट नाइट पार्टियों के प्रति वह सशंकित हो उठी थी। वहाँ भी उसने अपने दोस्तों को ड्रग सिगरेट में डालकर पीते हुए या रुपहली पन्नियों में लेकर उसे नसवार की तरह सूँघते हुए देखा था। नील ने बहुत जिद की थी मगर उसने नहीं ली थी। सबने कहा भी था - लेकर देख, एकदम जन्नत में पहुँच जाएगी!

इन दिनों उसकी परेशानी का एक कारण और भी था। उसका पीरियड दो महीने से मिस हो रहा था। कॉलेज में मिस इवॉन के फेयरवेल पार्टी में उसने दूसरी लड़कियों के साथ मिलकर एक मणिपुरी नृत्य प्रस्तुत किया था जिसके लिए उसे बाँस की लाठियों के बीच बहुत कूदना पड़ा था। उसे लगा था इस वजह से उसके पीरियड में देर हो रही है। मगर देखते-देखते जब दूसरा महीना भी आकर गुजर गया, वह चिंतित हो उठी। अब रह-रहकर जी भी मिचलाने लगा था। मन कच्चा हो रहा था। हमेशा गुस्सा और रोना आता रहता। बात-बेबात चिढ़ भी जाती। जब भी घर में या कहीं तलने या भुनने की गंध आती उसे उल्टी हो जाती। इसी चक्कर में वह कई दिनों तक कॉलेज लायब्रेरी भी जा नहीं पाई थी। थोड़े दिन बाद उसकी खोज-खबर लेने जसिका उनके घर चली आई थी। उस समय वह चुपचाप बिस्तर में लेटी हुई थी। उसे देखकर जसिका को बहुत हैरत हुई थे - "अरे! ये क्या हाल बना रखा है! कुछ लेते क्यों नहीं?"

जसिका ने तो मजाक में कहा था मगर उसकी बात सुनकर हिया एकदम से भरभराकर रो पड़ी थी। उसे इस तरह रोते देख जसिका घबरा उठी थी - "अरे रे... रोती क्यों है! मै तो मजाक कर रही थी!" मगर फिर उसकी सारी बातें सुन वह भी गंभीर हो गई थी - "मुझे तो कुछ ठीक नहीं लग रहा है!"

जसिका फार्मेसी जाकर प्रेगनेन्सी किट खरीद लाई थी। टेस्ट का नतीजा पॉजिटिव आया था। हिया के होश उड़ गए थे। जसिका भी चिंतित हो उठी थी। मामला संगीन था। हिया को शांत करना कठिन हो गया था उसके लिए। वह रोते हुए बाँस के पत्ते की तरह थरथरा रही थी। माँ कुछ ही दिनों में वापस आनेवाली थीं गाँव से। साथ में बुआ भी आ रही थी। बोर्ड परीक्षा में भी ज्यादा दिन नहीं बचे थे। बहुत सोच-विचार कर जसिका ने सलाह दी थी कि पहले नील से बात की जाय। देखें वह क्या कहता है। मगर हजार कोशिश के बाद जब हिया ने किसी तरह उससे फोन पर बात की थी, सारी बातें सुनकर वह देर तक चुप रह गया था और फिर किसी तरह खाँसते हुए कहा था वह जल्द ही इस समस्या को सुलझाने के लिए कोई रास्ता निकाल कर उसे फोन करेगा।

हिया इसके बाद बेसब्री से उसका इंतजार करती रही थी मगर नील ने दुबारा मुड़कर उसे फोन नहीं किया था। वह जब भी उसे फोन करने की कोशिश करती उसका फोन स्विच ऑफ ही मिलता। दिन बीतने के साथ-साथ उसकी घबराहट बढ़ती ही जा रही थी। उसकी पढ़ाई-लिखाई भी एकदम बंद पड़ गई थी। उसे कुछ भी सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे। बस एक जसिका का ही सहारा था। और एक दिन जसिका ने ही आकर बताया था कि आंजुना के बीच पार्टी में ड्रग बेचते हुए नील गिरफ्तार हो गया था। हिया को पता था अच्छी बॉडी के कारण नील ऐसी पार्टियों में बाउंसर की हैसियत से जाया करता है। मगर वह ड्रग भी बेचता था! सुनकर हिया को गश ही आ गया था।

आखिर जसिका ने कोई और रास्ता ना देख अपने ब्यॉय फ्रेंड शिवेन से बात की थी। शिवेन की कोई मुँहबोली भाभी एक प्राईवेट क्लीनिक में नर्स थी। उस क्लीनिक का डॉक्टर चुपचाप अबॉर्शन करने के लिए तैयार हो गया था। उसने दो-चार दिन के भीतर अबॉर्शन करवा लेने के लिए कहा था क्योंकि गर्भ तीन महीने से ज्यादा का हो गया था। अबॉर्शन के लिए दस हजार रुपये की जरूरत थी। हिया के पास सिर्फ हजार रुपये ही थे। बाबूजी उसे जेब खर्च के लिए रोज बीस रुपये देते थे जो उसके लिए कम पड़ते थे। उसने अपनी गुल्लक तोड़कर देखी थी। ढेर-सी रेजगारी गिनकर सात सौ रुपये और मिले थे। और कोई रास्ता ना देख उसने अपने कान की सोने की बूँदें उतारकर शिवेन को बेचने के लिए दे दी थी। माँ के सामने इसके लिए क्या बहाना बनाना है ये बाद में सोचा जाएगा। उन्हें बेचकर और पाँच हजार का बंदोबस्त हो गया था। जसिका ने भी हजार रुपये उधार दिए थे। शिवेन की भाभी के कहने पर डॉक्टर बाकी पैसे बाद में लेने को तैयार हो गया था।

बोर्ड की परीक्षा में सिर्फ सात दिन रह गए थे। माँ और बुआ गाँव से आ गई थी। हिया की हालत देखकर दोनों चौंके थे। हिया ने पढ़ाई के टेंशन का बहाना बनाया था। वह अक्सर अपने कमरे में बंद रहती। उसे बुआ की भेदती नजरों से डर लगता। उसे प्रतीत होता जैसे बुआ उसे आर-पार देख रही हैं। अपने कमरे के एकांत में पड़ी-पड़ी वह चुपचाप रोती रहती थी। उसे ऐसे में नील की बहुत याद आती थी। उसने उसे एक बार मुड़कर फोन नहीं किया था। अकेली मरने के लिए छोड़ दिया था। गिरफ्तार तो वह इसके कई दिनों बाद हुआ था। आखिर वह भी दूसरे मर्दों की तरह निकला! उसे उससे प्यार नहीं था, बस जिस्म की भूख थी। वह जितना सोचती उतना ही उसके दुख बढ़ जाते। जसिका ने इस बीच आकर बताया था डॉक्टर कहीं बाहर गया हुआ है। सात तारीख की सुबह तक ही लौटेगा। उसी दिन दोपहर को उसका अबॉर्शन हो पाएगा। सुनकर हिया परेशान हुई थी। आठ तारीख से उनकी बोर्ड परीक्षा शुरू होनेवाली थी।

मगर क्या किया जा सकता था। अबॉर्शन तो करवाना ही था। तय हुआ था, जसिका के घर जाकर पढ़ाई करने का बहाना करके वह घर से निकलेगी और डॉक्टर के क्लीनिक जाकर अबॉर्शन करवा लेगी। शिवेन की भाभी ने बताया था, ऐसी चीजें बहुत आसान होती हैं और दो-चार घंटे आराम करके वह घर जा सकती है।

सात तारीख को वह सुबह जसिका के साथ घर से निकली थी। माँ ने बहुत बुरा माना था। मना भी किया था। बुआ भी उनका साथ दे रही थीं मगर किसी तरह उन्हें मनाकर वह घर से निकली थी। गली के मोड़ पर शिवेन उनके लिए इंतजार कर रहा था। तीनों साथ क्लीनिक पहुँचे थे। क्लीनिक में शिवेन की भाभी ने उनका स्वागत किया था। हिया बुरी तरह घबराई हुई थी। उसे रह-रहकर रोना आ रहा था। जसिका ने उसका हाथ पकड़ा हुआ था। उसकी हथेलियाँ पसीने से भीगी हुई थी। जसिका और शिवेन को पढ़ाई के लिए लौटना था। भाभी ने उन्हें आश्वासन दिया था कि वे सब सँभाल लेंगी और हिया का ध्यान रखेंगी।

जसिका और शिवेन के जाते ही हिया का दिल बुरी तरह से घबराने लगा था। ना जाने क्यों अचानक उसे माँ की याद आने लगी थी। जी चाह रहा था किसी तरह वह अपनी माँ तक पहुँच जाए और उनकी गोद में छिप जाए। यह क्लीनिक एक निहायत गंदी, अँधेरी गली में था। वहाँ का वातावरण भी बहुत दमघोंटू और उदासी भरा था। बीमार मरीजों की भीड़, चिड़चिड़ी नर्से, बदतमीज वॉर्ड ब्यॉयज, दवाई, डेटॉल, फिनाइल की गंध और इधर-उधर से यदा-कदा आती कराहने की आवाजें। शायाद ओ.टी. में किसी की डिलीवरी हो रही थी। रह-रहकर उसकी तेज चीखें सुनाई पड़ रही थी। एक कोने में कोई सिसक-सिसककर रो रहा था। नर्सों की बातों से लग रहा था किसी का नवजात बच्चा मर गया है। "ये बच्चे होते क्या हैं, भीगे हुए रुई के नर्म गोले! आग लगाते ही भाप बनकर उड़ जाते हैं या गर्मी में ओस की बूँद की तरह पिघल जाते हैं, बस..." सुनकर उसने अनायास अपने तलपेट पर हाथ रख दिया था। थोड़ी ही देर बाद सफेद तौलिए में लपेटकर एक खिलौने-से बच्चे को कुछ लोग रोते-सिसकते हुए ले गए थे। हिया दुपट्टे से अपना चेहरा छिपाकर किसी तरह बैठी रही थी।

जाने कितनी देर बाद आकर शिवेन की भाभी उसे ओ.टी. में बुला ले गई थी। नीला गाउन अहनकर ऑपरेशन टेबल पर लेटकर वह अपने आसपास चलती गहमा-गहमी को महसूस करती रही थी। उसे अबॉर्शन के लिए तैयार किया जा रहा था। युनिफॉर्म में नर्से, बगल की मेज पर सजे तरह-तरह के औजार, चाकू-छुरियाँ, बर्तन, दवाइयाँ, सर के ऊपर स्पॉट लाइटस... फुसफुसाती आवाजें, दवाई की उग्र गंध... देखते-सुनते हुए उसकी आँखों से अनायास आँसू बहने लगे थे। जाने क्या-क्या याद आया था उसे उस

पल - अपना बचपन, अपनी प्रिय गुड़िया, बाबूजी, माँ, नील, उसका पहला चुंबन, समंदर की सुनहरी लहरों पर उभती-चुभती 'सपना-वासु' की - उनकी लाशें...

उसकी भरी हुई आँखों में एक परी का सफेद अक्स लहराया था। उसे एनेस्थेशिया का इंजेक्शन देते हुए वह गुनगुनाकर कह रही थी - रो मत, सब ठीक हो जाएगा, अब तुम एक अच्छी बच्ची की तरह सो जाओ... और हिया सचमुच एक अच्छी बच्ची की तरह अपने सारे सपनों और दुख के साथ चुपचाप सो गई थी!

आज बोर्ड परीक्षा शुरू हो रही है। कॉलेज कैंपस में चारों तरफ चहल-पहल है। सभी के हाथों में खुली किताबें हैं, आँखों में जगार और चेहरे पर तनाव। राहत को गोआ बोर्ड में प्रथम आना है। वह पूरी तरह से तैयार है फिर भी तनाव में है। रतन नर्वस हो रहा है। वह किसी भी तरह खराब रिजल्ट नहीं कर सकता। उस पर उसकी तीन बहनों की जिम्मेदारी है। रोशन अपनी स्पोर्ट्स कार में आया है और कैंटिन में बैठा मस्ती कर रहा है। पढ़ाई का उसे कोई टेंशन नहीं। आगे चलकर उसे अपने बाप का जमा-जमाया बिजनेस सँभालना है। ऋतु की आँखें उसके मोटे चश्मे के फ्रेम के पीछे पढ़-पढ़कर सूज गई हैं। उसे बहुत पढ़ना है, आई.ए.एस. ऑफिसर बनना है। मौज-मस्ती के लिए तो उम्र पड़ी है। अभी आलतू-फालतू चीजों में समय नहीं बर्बाद करना है उसे।

परीक्षा शुरू होने में थोड़ी ही देर रह गई है मगर एक कोने में बैठी हुई जसिका अपने सामने फैली हुई किताब में किसी भी तरह ध्यान नहीं लगा पा रही है। उसकी आँखों के सामने रह-रहकर हिया का चेहरा घूम रहा है। जाने कैसी है वह!

दूसरी तरफ हिया के बाबूजी और माँ हिया की डायरी में जसिका का फोन नंबर ढूँढ़ते फिर रहे थे उसे फोन करने के लिए। हिया ने उसके साथ जाने के बाद कल दोपहर के बाद एक बार भी फोन नहीं किया था। जसिका का घर कॉलेज के पास था। हो सकता है हिया वही से कॉलेज चली जाए परीक्षा देने के लिए। ऐसा उसने पहले भी किया है। मगर उसे फोन तो करना चाहिए था एकबार। सुबह देर तक रास्ता देखने के बाद अब वे परेशान हो रहे थे और हिया के बाबूजी हिया की माँ को यह कहते हुए डाँट रहे थे कि उन्होंने जसिका का फोन नंबर कहीं लिखकर क्यों नहीं रखा!

...और इन सब से दूर एक अँधेरी गली के छोटे-से क्लीनिक के ऑफिस में शिवेन की भाभी काँपते हाथों से जसिका का नंबर डायल कर रही थी। कल तक तो उसने किसी तरह उसे ये बोलकर बहला लिया था कि हिया को ज्यादा रक्तपात हो जाने की वजह से ऑब्जर्वेशन में रखा गया है और उसे आने की जरूरत नहीं, वे सब सँभाल लेंगी। मगर अब उसे बताना ही पड़ेगा कि अपने अजन्मे बच्चे के साथ हिया भी मर गई है।

वह जाकर हिया के परिवार को सूचित कर दे! इसी क्लीनिक के एक तरफ सीलन और गहरे सन्नाटे भरे अँधेरे कॉरीडोर के आखिरी छोर पर स्ट्रेचर पर सफेद कपड़े से ढकी एक ठंडी, लावारिश लाश पड़ी है - सर से पाँव तक निचुड़ी हुई - एकदम जर्द, रक्त शून्य! उसकी कोख के साथ उसके सीने का पिंजरा भी खाली हो गया है! अब ना उसमें साँसें हैं, ना जीवन है, ना कोई सपना! सब रीत गया है। शेष कुछ नही अब यहाँ - ना बसंत और ना उसकी प्रतीक्षा ही! किसी को अब तक पता नहीं, इस साल की गिनती में एक मौसम कम पड़ गया है, बसंत बिना जीवन की देहरी उतरे दबे पाँव वापस चला गया है - शायद फिर कभी ना लौटने के लिए... मगर मृत्यु की इस अडोल, अझेल चुप्पी के बीच जाने कैसे किशोर हिया की दो खूबसूरत आँखें अभी भी जिंदा हैं और उनमें मचलते समंदर की सुनहरी लहरों में वह स्पष्ट देख रही है दो उभती-चुभती लाशें... एक उसकी और दूसरी... वह अपने पहले चुंबन को अब भी भूली नहीं है! वह उसके मृत होंठों पर जीवित है!

https://www.hindiadda.com/kanch-ke-phool/